SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-3, March- 2024
www.shikshasamvad.com

हिन्दी साहित्य और चरितमूलक उपन्यास

डॉ धीरेन्द्र कुमार सिंह
गांधी स्मारक त्रिवेणी पीजी कालेज बरदह,
आजमगढ़

सारांशः-

हिन्दी साहित्य में उपन्यास विधा का विकास 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ, जिसमें समाज, संस्कृति और मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्ति मिली। चरितमूलक उपन्यास इस विधा की एक प्रमुख शैली है, जिसमें किसी एक विशिष्ट चरित्र के जीवन, संघर्ष और व्यक्तित्व को केंद्र में रखा जाता है। इन उपन्यासों में पात्रों के आंतरिक और बाह्य जीवन का गहन विश्लेषण होता है, जिससे पाठक न केवल उस चरित्र के साथ जुडते हैं, बल्कि समाज और मानव स्वभाव को भी समझते हैं।

डा० वृन्दालाल वर्मा, अमृतलाल नागर , डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, भगवतीचरण वर्मा, रांगेय राघव, विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, नरेन्द्र कोहली जैसे लेखकों ने इस विधा में उत्कृष्ट कृतियों का सृजन किया। उदाहरणस्वरूप, 'मानस का हंस' और 'खंजन नयन' में क्रमशः तुलसीदास और सूरदास के चरित्र को प्रस्तुत किया गया है। और रांगेय राघव के उपन्यास 'लोई का ताना' में कबीरदास के जीवन के विभिन्न चारित्रिक रहस्यों का उद्घाटन करने के साथ ही समाज की तत्कालीन परिस्थितियों का भी चित्रण किया गया है।

चरितमूलक उपन्यासों का सामाजिक और साहित्यिक महत्व इस बात में है कि ये व्यक्ति और समाज के बीच के संबंधों को गहराई से विश्लेषित करते हैं। यह विधा पाठकों को प्रेरित करती है, जीवन के सत्य और संघर्षों को समझने का अवसर प्रदान करती है, और समाज के प्रति जागरूकता बढ़ाती है।

कीवर्ड्सः *हिन्दी साहित्य, चरितमूलक उपन्यास, उपन्यास विधा, पात्र चित्रण, समाज परिवर्तन, मानवीय संवेदनाएँ,*

हिन्दी साहित्य में ऐसे बहुत से चरि़त्र रहे हैं, जिन्होने समाज को एक नई दिशा दी। ऐसे लेखक, कवि, समाज के लिए आकर्षण का केन्द्र बने। जहाँ उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के प्रति जिज्ञासा रही है, वहीं उनके जीवन से सम्बन्धित वाद–विवाद और समता को जानने के लिए जनमानस उत्सुक रहा है।

हिन्दी साहित्य के मध्यकाल में भी कबीरदास, सूरदास, मीराबाई, तुलसीदास, बिहारीलाल, एवं घनानन्द इत्यादि ऐसे कवि रहे हैं, जिनके प्रति साहित्यकारों और पाठकों की जिज्ञासा निरन्तर बनी रही है। यही कारण है कि अनेक ग्रन्थों में प्राप्त इनके जीवन से सम्बन्धित कथ्यों पर शोध होते रहे हैं, इसी क्रम में उपन्यास गद्य विधा में भी ये नायक बनकर उभरे। चरितमूलक उपन्यासों में इन कवियों के जीवनचरित को इतिहास और कल्पना के मधुर मिश्रण के आधार को बनाकर उनके जीवन के विभिन्न रहस्यों को रोचकता के साथ पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है।

चरितमूलक उपन्यास अतीत की ओर खुलने वाली एक ऐसी खिड़की है जिसमे हम अपने जैसे मनुष्यों को उनके काल में जीवन का संघर्ष करते हुए विकास की ओर अर्थात् हमारी ओर बढ़ते देख पाते है। उपन्यासकार इन कृतियों में निजी सत्य, ऐतिहासिक सत्य तथा पात्र के सत्य को बड़े ही कलात्मक ढंग से समन्वित करता है। उपन्यासकार उस व्यक्ति के जीवन–दर्शन को तो वाणी देता है, साथ ही इतिहास के गहन सागर से विशिष्ट व्यक्तियों के रूप में ऐसे मोती भी निकल लाते है जो वर्तमान पाठक से अपना सीधा सम्बन्ध जोड़ता है।

चरितमूलक उपन्यासों में मुख्य पात्र का परिवेश और तत्कालीन वातावरण बहुत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि उस व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण उसका परिवेश उस पर पड़ने वाले घात–प्रतिघात उसके जीवन को विशिष्ट मोड़ देने वाली घटनाएँ उसके विचारों को परिपूर्ण करने वाले सन्दर्भ और उसके चारों ओर गहराते मानव समुद्र में उठती गिरती लहरे, ये सभी उसके व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। वह व्यक्ति जब समाज के मंच पर उतरता है, जीवन के संघर्षो में भाग लेता है, तब पता चलता है कि उसका व्यक्तित्व अपने परिवेश को प्रभावित करने की क्षमता रखता है।

"चरितमूलक उपन्यास में परिवेश एवं कृति कि औपन्यासिक प्रस्तुति का विशिष्ट महत्व होता है। इसमें उपन्यासकार मुख्यतः व्यक्ति विशेष को चित्रित करता है। यह व्यक्ति अपने चिंतन मनन, समाज में अपने जीवन, सामाजिक आर्थिक राजनितिक दबावों से निर्मित परिवेश और समाज की अन्य इकाइयों से अंतःक्रिया करता हुआ एक विशिष्ट प्रकार का व्यक्तित्व प्राप्त करता है। उसकी इस विकास यात्रा को लेखक अपने दृष्टिकोण से अभिव्यक्ति देता है।"[1]

साहित्य के केंद्र में मानव–जीवन होने के कारण व्यक्ति के जीवन का उल्लेख किसी न किसी रूप में समस्त साहित्य में व्याप्त रहता है। अतः साहित्य की विभिन्न विधाएं एक प्रकार से जीवनी से जुडी रहती हैं। परन्तु इस आधार पर हम समस्त साहित्य को जीवनी विधा के अंतर्गत नहीं रख सकते, क्योंकि प्रत्येक विधा में जीवन

---

[1] हिंदी के जीवनी परक उपन्यास :एक अध्ययन,डॉ.संगीता सहजवानी,प्रथम संस्करण सन् २००६,अमन प्रकाशन,पृ ३६

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

का आकार–प्रकार विश्लेषण चित्रण विधागत स्वरुप के अंतर्गत ही होता है। साहित्य में जीवनी से अभिप्राय व्यक्ति की तथ्यपरक जीवन घटनाओं से है। इसके लिए समान्य मानव समाज में से किसी विशिष्ट व्यक्ति को चुन लिया जाता है और अधिक गहराई के तहत वास्तविकता से उसके जीवन की घटनाओं एवं परिस्थितियों का अध्ययन किया जाता है। जीवन चरित व्यक्ति विशेष के जीवन का अभिलेख या कलाकृति के रूप में प्रणित किसी व्यक्ति का सत्यतापूर्ण आलेख होता है। जिसमें जीवन के माध्यम से किसी आत्मा के जीवन का प्रमाणिक शब्द चित्र प्रस्तुत किया जाता है।

हिंदी में जीवनी को जीवन चरित अथवा जीवनी चरित भी कहा जाता है। 'जीवनी' शब्द जहाँ व्यक्ति जीवन की बाह्य घटनाओ को प्रकट करता है, वहीं चरित उसकी आंतरिक विशेषताओं को भी प्रकाशित करता है। जीवनी में किसी व्यक्ति विशेष के बाह्य एवं आंतरिक जीवन का प्रकाशन इस प्रकार किया जाता है, कि उसका गुण–दोषों से युक्त जीवन साकार हो उठता है। इस विषय में शांति खन्ना जी लिखते हैं –"सामान्य मानव जिसे पहचानने के लिए मै सर्वदा प्रयत्नशील रहा हूँ साहित्य की दूसरी विधाओ की अपेक्षा जीवनचरित में वह कहीं अधिक विषद तथा परिपूर्ण होकर प्रकट होता है। इसमें जब लेखक अध्ययन के परिणाम स्वरुप अपनी प्रतिक्रियाओं को कथारूप में वर्णित करता है, तब वह एक प्रकार के साहित्य का निर्माण करता है। अपने अर्थ में 'जीवनी' शब्द इसी साहित्य रूप का परिचायक है।"[2] अतः जीवनी गद्य साहित्य की वह विधा है जिसमें व्यक्ति विशेष के जीवन के इतिहास का साहित्यिक वर्णन होता है। इसमें साहित्य के अन्य रूपों की अपेक्षा वैयक्तिकता और वास्तविकता का अधिक आग्रह रहता है। लगभग इन्हीं विशेषताओं से युक्त जीवन चरितात्मक उपन्यास कतिपय विशेषता रखता है।

विश्व साहित्य की विभिन्न विधाओं में आज उपन्यास साहित्य सर्वाधिक पुरस्कृत और लोकप्रिय विधा है। उपन्यास विधा आधुनिक परिवेश की देन है। शिल्प की दृष्टि से उपन्यास विधा अन्य विधाओं की अपेक्षा अधिक सहज और बोध गम्य है। उपन्यासकार विभिन्न विधाओं के सर्जक की ही तरह अपने अनुभवों और भोगे हुए सत्य को यथार्थ परिस्थितियों और वातावरण के बीच चरितों के माध्यम से प्रकट करता है। प्राचीन समय की कथा विधा की परम्परागत विकसित स्वरूप ही आज की उपन्यास विधा है। उपन्यास जन–मानस का यथार्थ चित्रण है। गद्य के स्वरूप में रहने पर भी, इसका प्रभाव पद्य से कम नही है। कुछ विद्वानों की मान्यता है कि उपन्यास विधा पूँजीवाद के आगम से ही प्रारम्भ हुआ है। उपन्यास प्रारम्भ से लेकर आज तक अनेक मंजिलों को पार किया, उसमें से जीवनचरितमूलक मंजिल भी एक है। चरितमूलक उपन्यास अर्थात किसी महान व्यक्ति के जीवनचरित का मौलिक रूप में वर्णन करने वाली गद्य रचना। इन उपन्यासों की विशेषता यह है, कि उसके पात्र ऐतिहासिक होते हैं, काल्पनिक नहीं। जीवनी और उपन्यास के मध्य का सेतु ही चरितमूलक उपन्यास है। वस्तुतः चरितमूलक उपन्यासकार वस्तु सत्य एवं भाव सत्य के बीच संतुलन स्थापित करता है। चरितमूलक उपन्यासों के अध्ययन के लिए उन के तत्व पर ध्यान देना आवश्यक है।

---

[2] हिंदी का जीवनीपरक साहित्य,शांति खन्ना,प्रथम संस्करण सन् १६७३,सन्मार्ग प्रकाशन,पृ २८

चरितप्रधान साहित्य में उपन्यास का स्थान सर्वोपरि है। हिन्दी साहित्य में मौलिक चरितमूलक उपन्यासों की संख्या कम ही है। किन्तु हिन्दी की अनेक विधाओं में साहित्यिक ग्रान्थों की संख्या अनेक हैं। साहित्य क्षेत्र में 'जीवनी' एक विधा है। परन्तु जीवनीचरितमूलक या जीवनी पर आधारित उपन्यास लिखना एक विशिष्ट काम कहलाता है। उपन्यास विधा के माध्यम से सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक या ऐतिहासिक महापुरूष की जीवनी अपने उद्देश्य की पूर्ति कर सकती है।

हिन्दी साहित्य में अन्य भारतीय भाषाओं की तरह ही चरितमूलक उपन्यास उपविधा का प्रचलन आधुनिक काल में हुआ। वैसे तो चरितमूलक उपन्यास 20वीं सदी की देन है। पाश्चात्य उपन्यास विधा के विकास में बीसवीं शताब्दी में ही चरितमूलक उपन्यास लिखे जाने के संकेत मिले हैं। आधुनिक हिन्दी उपन्यास पर पाश्चात्य साहित्य का गहरा प्रभाव है इसे नकारा नही जा सकता। फलस्वरूप जीवनियों को उपन्यास के रूप में प्रस्तुत करने के संकेत इसी युग में देखे जाने लगे।

प्राचीन काल में भारतीय कथा–साहित्य में सर्वपरिचित संत, साधु, विद्वान, राजा आदि की जीवनियाँ लिखी जाती थी। जीवनी में जीवनी नायक का वर्णन होता था। इन जीवनियों के आधार पर अनेक ऐतिहासिक उपन्यास लिखे गए। किन्तु हिन्दी में बीसवीं सदी तक किसी साहित्यकार ने चरितात्मक उपन्यास के रूप में कोई उपन्यास नही लिखा। हाँ, हिन्दी उपन्यास साहित्य में डा0 वृन्दालाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यास 'झाँसी की रानी' में जीवनचरितात्मक उपन्यास के रूप की झलक मिलती है। इसमें रानी लक्ष्मीबाई का जीवनवृत है परन्तु कथानक रानी लक्ष्मीबाई के समय का ऐतिहासिक लेखा–जोखा ही लगता है। इसलिए आलोचक इसे ऐतिहासिक उपन्यास ही मानते है। फिर भी आधुनिक चरितात्मक उपन्यास के अभाव और विकास में इसे नकारा नही जा सकता है। अमृतलाल नागर लिखित 'खंजन नयन' तथा 'मानस का हंस' रचनाएँ भी क्रमसः सूरदास एवं तुलसीदास पर आधारित उपन्यास हैं। डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदी, भगवतीचरण वर्मा. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, नरेन्द्र कोहली आदि ने भी चरितमूलक उपन्यास के विकास में काफी योगदान दिया। चरितमूलक उपन्यास के विकास में भरसक योगदान देने वालों में डा0 रांगेय राघव जी का नाम प्रमुख है। डा0 रांगेय राघव जी ने साधु, संत, विद्वान तथा साहित्यिक जीवनी–नायकों को उपन्यास के रूप में प्रस्तुत किया है। वे उपन्यास इस प्रकार हैं– 'देवकी का बेटा', 'लोई का ताना', 'यशोधरा जीत गई', 'रत्ना की बात', 'भारती का सपूत', 'लखिमा की आँखे', 'धूनी का धुआँ', 'मेरी भव बाधा हरो' और आँधी की नीवें। इसमें क्रमशः कृष्ण, कबीर, गौतम बुद्ध, तुलसीदास, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, कवि विद्यापति, गोरखनाथ, बिहारी तथा महाराणा प्रताप जैसे नर–वीरो की जीविनियाँ औपन्यासिक कलात्मकता से प्रस्तुत की गई है।

चरितमूलक उपन्यासों का स्वरूप किन स्थितियों को लेकर पूर्णता को प्राप्त होता है इसका विवेचन करने पर यह लगता है कि चरितमूलक उपन्यासों में एक सीमा तक ही कल्पना का आश्रय लेना चाहिए जो चरितमूलक उपन्यास को उपन्यास का स्वरूप प्रदान करने हेतु अपेक्षित हो। इस दृष्टि से हमने केवल उसी सीमा तक चरितमूलक उपन्यासों में छूट दी है। जो छूट ऐतिहासिक उपन्यासों में कल्पना को दी जाती है।

कुछ उपन्यासों को शुद्ध चरितमूलक उपन्यास के रूप में स्वीकार कर उनका तात्विक विवेचन किया इन उपन्यासों में उपन्यासकार ने कल्पना की छूट को सूक्ष्म रूप में लेकर प्रसिद्ध चरितमूलक जीवनी को ही उपन्यास के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

चरितमूलक उपन्यासों में चरितनायक के जीवन से सम्बन्ध रखने वाले तत्कालीन परिवेश का सजीव एवं मर्मस्पर्शी रूप में चित्रण करना आवश्यक हो जाता है जो कि चरितनायक के जीवन को एक आधार एवं सार्थकता प्रदान करता है। चरितमूलक उपन्यास प्रायः परिवेश के साथ एकाकार कर अपनी चरितार्थता सिद्ध करता है।

हिन्दी साहित्य के कवि रूपी जन नायकों के चरित को केन्द्र में रखकर लिखे गए उपन्यास चरितमूलक उपन्यास हैं। वस्तुतः चरितमूलक उपन्यास, ऐतिहासिक उपन्यास व जीवनी से सर्वथा भिन्न लक्ष्य को लेकर चलते हैं, जिसका प्रमुख सम्बन्ध इतिहास की बड़ी–बड़ी घटनाओं से न होकर, इतिहास निर्माण की प्रक्रिया में अपना प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में भूमिका को रेखांकित करने से है। इन चरितमूलक उपन्यासों की रचना अधिकतर सामाजिक हलचलों, आर्थिक विषमताओं एवं राजनीतिक उठा–पटक के कारण किसी काल विशेष में होती है। इस युग विशेष के नायक कहे जाने वाले ये लोग वास्तव में उस समय के भूकम्प मापक यंत्र की तरह ही होते हैं, जो युग परिदृश्य के छोटे से छोटे कम्पन को आत्मसात् करके समाज पर प्रक्षेपित करते हैं। ये लोग अत्यधिक कल्पनाशील एवं संवेदनशील होने के कारण सामान्य से भी सामान्य लोगों के स्वर बन जाते हैं।

चरितमूलक उपन्यासों में कल्पना एवं इतिहास का प्रश्न उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि ऐतिहासिक उपन्यासों में। चरितमूलक उपन्यासों में कुछ चरित नायकों को छोड़कर किसी अन्य नायक का प्रामाणिक जीवन चरित उपलब्ध नहीं होता है। उपन्यासकार रांगेय राघव ने 'लोई का ताना' उपन्यास की भूमिका में लिखा है– "प्रस्तुत ग्रन्थ में कबीर की झाँकी है। वैसे कबीर के जीवन सम्बन्धी तथ्य अधिक नहीं मिलते। मैं उनके साहित्य को पढ़कर जिन निष्कर्षों पर पहुँचा हूँ, उन्हीं को मैंने उनके जीवन का आधार बनाया है।"

'रत्ना की बात' उपन्यास की भूमिका में पुनः रांगेय राघव ने अपने विचार स्पष्ट करते हुए लिखा है– "प्रस्तुत पुस्तक में तुलसीदास का जीवन वर्णित है। उनका जीवनवृत्त ठीक से नहीं मिलता। जो है वह विद्वानों द्वारा पूर्णतया प्रामाणिक नहीं माना गया है। अतः जो उन्होंने अपने बारे में कहा है, जो बाह्य साक्ष्य हैं उन सबने मिलकर ही महाकवि का वर्णन पूरा कर सकना सम्भव किया है.....परन्तु ऐसे पद, दोहे आदि जो इतने मुखर हैं कि सम्भवतः लिखे बाद में गये होंगे। कहे पहले गये होंगे।"[3] इसका आशय यह है कि लेखक के सम्मुख या तो जनपरम्परा में प्रचलित कथाएँ हैं अथवा यत्र–तत्र–सर्वत्र बिखरी कुछ सामग्री है जिसे चरितमूलक उपन्यासों का आधार बनाया जा सके। उपन्यासकार ने अन्तर्साक्ष्य को अधिक प्रामाणिक मानकर अपने उपन्यासों का उपजीव्य बनाया है। उपन्यासों में लिखे गए कवियों की काव्य पंक्तियों को उनके जीवन की घटनाओं के साथ सम्मिलित करके इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि वे स्वाभाविक सी जान पड़ती हैं। 'रत्ना की बात' महाकवि तुलसीदास के जीवन की औपन्यासिक कृति है। मरण शैय्या पर लेटे कवि तुलसी के मनश्चक्षुओं के सामने सम्पूर्ण जीवन का अतीत पूर्वदीप्ति की भांति उपस्थित हो जाता है।

---

[3] रत्ना की बात, रांगेय राघव, भूमिका

'मेरी भव बाधा हरो' उपन्यास महाकवि बिहारीलाल के जीवन पर आधारित है। इसमें ससुराल में निवास करते समय अपमान की अनुभूति, काव्यरचना के माध्यम से वशीकरण वैभव विलास में निमग्न होना और अन्त में सुशीला के देहावसान से व्यथित होकर भोगों से विमुख होना आदि इस कृति में चित्रित किया गया है।

'खंजन नयन' उपन्यास में अमृतलाल नागर ने कृष्ण भक्ति सूरदास के जीवन की कुछ रोचक बातों को कथा साहित्य के माध्यम से व्यक्त कर हिन्दी उपन्यास साहित्य को एक चरितमूलक उपन्यास का उपहार दिया। अमृतलाल नागर जी ने सूरदास के सागर समान जीवन में अपने कथा साहित्य की नौका द्वारा जो पाठकों की सैर कराई वह अपने आपमें अद्वितीय है। सूरदास के जीवन की कुछ अव्यक्त मानवीय घटनाओं को जो कि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष, इश्क मजाजी से इश्क हकीकी की ओर उन्मुख हुआ है। उसे बड़े ही मार्मिक ढंग से उपस्थित किया है नागर जी के अथक प्रयासों से ही कथा साहित्य को ऐसे रोचक उपन्यास की प्राप्ति हुई है।

'मानस का हंस' उपन्यास में नागर जी ने तुलसीदास के जीवन चरित का अत्यन्त सजीव चित्रण किया है। इस उपन्यास में बारम्बार पूर्वदीप्ति का प्रयोग किया गया है। हिन्दी के चरितमूलक उपन्यासों में 'मानस का हंस' अप्रतिम एवं अद्वितीय उपन्यास है। इसमें तुलसी के जीवन में बाह्य संघर्ष से अन्तः संघर्ष कई गुना अधिक है। इस उपन्यास में उपन्यासकार ने तुलसी के व्यक्तित्व में राम और काम के संघर्ष को दिखाया है।

'बिरले दोस्त कबीर के' उपन्यास में कैलाश नारायण तिवारी ने कबीर के आत्मसंघर्ष को दर्शाया है। कबीर के समय में कबीर के ऊपर केवल और केवल फतवे ही जारी किए जाते थे, जो फतवे जारी करते थे वे अपने आपको कबीर से उच्च ही मानते थे।

'रंगराची' उपन्यास सुधाकर अदीव द्वारा लिखित मीराबाई के संघर्षमय जीवन की महागाथा है इसमें मीरा अपने जीवन के महायान के माध्यम से जन–जन में व्याप्त है और विगत वर्षों में भी रहेंगी। मीरा जिस सामंती परिवेश में जन्म ली, पलीं और उनका विवाह हुआ वह परम्पराओं और मर्यादाओं के बन्धन में स्त्री को पूरी तरह से जकड़े हुए था। इसके उपरांत भी मीरा अपने समय की उपेक्षा को आत्मसात करके भी भक्तिमार्ग पर सक्रिय रहीं।

'पीताम्बरा' उपन्यास के लेखक भगवतीशरण मिश्र ने यह दर्शाया है कि मीरा मात्र कृष्णोपासिका नहीं थी बल्कि वह एक निर्भीक, निडर एवं समाज सुधारिका भी थी। अपने पति की मृत्यु के उपरांत जौहर न धारण करना। सतीप्रथा के रूप में सड़ी–गली सामाजिक कुरीतियों को दृढ़तापूर्वक नकारा। मीरा उन नारियों में प्रमुखता को ग्रहण करने वाली नारी हैं जो समय की शिला पर अपना अमिट छाप छोड़ने में सफल हुई हैं। मीरा बालपन से ही कृष्णार्पिता थीं वे तो स्वयं सामंती जीवन व्यतीत कर सकती थीं परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। ऐश्वर्य वैभव से युक्त मार्ग को त्यागकर ईश्वरीय साधना के मार्ग को अपनाया पुरुष प्रधान समाज की विकृत मानसिकता का विरोध किया।

साधु–संतों के सानिध्य को प्राप्त करने के लिए मीरा घर–द्वार एवं विलासिता पूर्ण जीवन को छोड़ दिया और आध्यात्मिक संसार को आत्मसात किया जहाँ उनके गिरधर नागर का निवास था। आम जनमानस को उनके दुःख–दर्द एवं अभावों से परिपूर्ण जीवन में भगवद् भक्ति द्वारा परिष्कृत एवं पल्लवित कर उन्हें राहत देने के

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

सेवाकार्य में अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक संघर्ष रहीं। यदि देखा जाय तो संत मीरा का अथक अनुपम जीवन संघर्ष यही था।

लोई का ताना' उपन्यास में रांगेय राघव ने औपन्यासिक तत्वों का सफल प्रयोग किया है। इस उपन्यास में चरित के साथ ही साथ देशकाल एवं परिस्थिति को सजीव एवं सुन्दर चित्रण किया है। इसमें कबीर को लोकयुग निर्माता एवं एक साहित्यकार के रूप में दर्शाने का पूर्ण प्रयत्न किया गया है। रांगेय राघव जी ने स्वयं कहा है कि– "वैसे कबीर के जीवन सम्बन्धी तथ्य अधिक नहीं मिलते। मैं उनके साहित्य को पढ़कर जिन निष्कर्षों पर पहुँचा हूँ उन्हीं को मैंने उनके जीवन का आधार बनाया है।"[4] इस उपन्यास में रांगेय राघव की कल्पना अतीत में वर्तमान को उपस्थित करती है।

'सुजान' उपन्यास में मिथिलेश कुमारी मिश्र ने रीतिमुक्त काव्य धारा के कवि घनानन्द का सुजान गणिका के प्रति आकर्षण को दर्शाया है। इस उपन्यास में यह भी दिखाया गया है कि किस प्रकार व्यक्ति रूपलोभ के वशीभूत होकर अपना सर्वस्व नष्ट कर देता है। घनानन्द के समान ही आज के आधुनिक परिवेश में बहुत से लोग मूलाधार चक्र में ही अपने को स्थित किए हुए हैं।

चरितमूलक उपन्यासों की भाषा युगानुरूप नाना प्रकार के देशज, विदेशज, तत्सम् एवं तद्भव से परिपूर्ण हैं। चूंकि ये चरितमूलक उपन्यास महान महानायकों, युगनायकों एवं महाकवियों पर आधारित है। इसमें उच्चकोटि के मुहावरों, कहावतों, सूक्तियों एवं सत्य वचनों का होना स्वाभाविक ही है। भाषा भी चरितमूलक उपन्यासों में युगानुरूप ही है।

संदर्भ :

- द्विवेदी, ह. (2010). हिन्दी उपन्यास का इतिहास. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
- प्रेमचंद, म. (1936). गोदान. लखनऊ: सरस्वती प्रेस.
- प्रसाद, ज. (1930). कंकाल. वाराणसी: भारतीय ज्ञानपीठ.
- चतुरसेन, आ. (1948). वैशाली की नगरवधू. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन.
- शुक्ल, ह. (1985). आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा.
- वर्मा, म. (1942). स्मृति की रेखाएँ. इलाहाबाद: साहित्य भंडार.
- शर्मा, रामविलास. (1954). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
- मिश्र, न. (1995). जयशंकर प्रसाद का साहित्य और दर्शन. वाराणसी: काशी विद्यापीठ.
- पाठक, र. (2000). हिन्दी उपन्यास: समाज और संस्कृति. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.

[4] लोई का ताना, रांगेय राघव, भूमिका

- त्रिपाठी, वी. (2008). आधुनिक भारतीय उपन्यास की परंपरा. दिल्लीः पेंगुइन बुक्स.
- द्विवेदी, न. (2011). हिन्दी साहित्य में यथार्थवाद. जयपुरः राजस्थान साहित्य अकादमी.
- वाजपेयी, के. (1997). साहित्य और समाज. लखनऊः साहित्य प्रकाशन.
- झा, क. (1986). भारतीय उपन्यास का मनोवैज्ञानिक अध्ययन. पटनाः साहित्य सागर.
- गुप्ता, प. (2003). महिला चरित्र और हिन्दी उपन्यास. दिल्लीः साहित्य अकादमी.
- सिंह, ए. (2015). हिन्दी साहित्य में सामाजिक चेतना. आगराः पब्लिकेशन इंडिया.
- कुमार, एस. (2012). चरित्र–निर्माण और उपन्यास. नई दिल्लीः प्रकाशन भारती.
- वर्मा, श. (2001). हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद. इलाहाबादः साहित्य भवन.
- पाण्डेय, आर. (1998). उपन्यास और समाजः एक विश्लेषण. वाराणसीः भारती प्रकाशन.
- चौहान, एम. (2010). हिन्दी साहित्य का आधुनिक रूप. नई दिल्लीः भारतीय ज्ञानपीठ.
- सिंह, व. (2020). हिन्दी उपन्यासः विचार और दृष्टिकोण. जयपुरः राष्ट्रीय साहित्य प्रकाशन.

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-03, March- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-March-2024/40

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ धीरेन्द्र कुमार सिंह

For publication of research paper title

"हिन्दी साहित्य और चरितमूलक उपन्यास"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-03, Month March, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com